Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JUNE-JULY, 2022, VOL-10/52

प्राथमिक कक्षा के अध्यापकों की शिक्षा में मूल्य शिक्षा की उपादेयता

समाप्ति पॉल, Ph.D.
प्राचार्य श्री राम कृश्ण शारदा आश्रम टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, रविन्द्र पथ हजारीबाग झारखण्ड–825301
Email Id:-samaptisrsa@gmail.com

Paper Received On: 25 JULY 2022

Peer Reviewed On: 31 JULY 2022

Published On: 1 AUGUST 2022

Abstract

शिक्षा केवल कार्यक्षमता को बढ़ाने मात्र का साधन नहीं है। यह जनसाधारण की सहभागिता को व्यापक बनाने तथा व्यक्ति एवं समाज की समग्र गुणवत्ता के उन्नयन का एक प्रभावी उपकरण भी है। जनाधिक्य के कारण सरकार क्षेत्रीय, सामाजिक तथा लैंगिक असमानताओं को दूर करने हेतु शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने के संगठित प्रयास करने के लिए वचनबद्ध है, क्योंकि तेजी से बदलते घरेलू एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य को देखते हुए केवल मात्रात्मक विस्तार से वांछित परिणाम नहीं प्राप्त होंगे।

स्कूल शिक्षा का असल उद्देश्य है राष्ट्र निर्माण में मानव क्षमता का भरपूर उपयोग करना इसके लिए जरूरी होता है सभी को एक समान शिक्षा मिले। यही वह मूल कारण है जिसने शिक्षा के प्रति कल्याण की दृष्टि को बदल कर अधिकार आधारित दृष्टिकोण प्रदान किया। इस प्रकार इन चुनौतियों के क्रम में शिक्षा की नींव प्रारम्भिक शिक्षा है जिसमें प्राथमिक एवं उच्चतर प्राथमिक शिक्षा दोनों शामिल हैं। प्रारम्भिक शिक्षा तक सबकी पहुँच हो, इसके लिए बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009, 1 अप्रैल, 2010 से लागु हुआ। नामांकन और हाजिरी बढ़ाने के साथ–साथ बच्चों के स्वास्थ्य स्तर को सुधारने के लिए किए गए प्रमुख उपयोग–'स्कूल में राष्ट्रीय मध्याह्न भोजन'– कार्यक्रम को भी शामिल किया गया है।

जब हम शिक्षा पर चर्चा कर रहे हैं तो मूल्य उससे अछूता कैसे रह सकता है? मूल्य शिक्षा की आत्मा है और मूल्यपरक शिक्षा का दायित्व सबका है परिवार का भी, विद्यालय का भी और समाज का भी। परिवार और समाज अनौपचारिक मूल्यपरक शिक्षा का दायित्व निभाते हैं, किन्तु शिक्षक के कंधों पर का भार औपचारिक और अनौपचारिक मूल्यपरक शिक्षा का दायित्व से मुक्त नहीं हो सकता है। मूल्यपरक शिक्षा के क्रम में शिक्षक की जिम्मेदारी है कि वह विद्यार्थीयों को इतना सक्षम बनावे कि छात्र स्वयं मूल्यों की तलाशकर नैतिक निर्णय ले सकें। अब चाहे हम शिक्षा को जन्मजात शक्तियों का विकास करने की प्रक्रिया मानें, वैयक्तिक विकास की प्रक्रिया मानें, सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया मानें, सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया मानें या वातावरण के अनुकूलन की प्रक्रिया मानें, इन सभी दृष्टियों से शिक्षा से जीवनमूल्यों के साथ गहराई से सम्बद्ध है। यहाँ यह आवश्यक होगा कि मूल्य–परक शिक्षा पर चर्चा से पूर्व 'मूल्य क्या है, यह जान लें।

Scholarly Research Journal's* is licensed Based on a work at *www.srjis.com

मूल्य :–

मूल्य समाज द्वारा स्वीकृत वे मानक होते हैं जो समाज का अंग होने के नाते इकाइयों, व्यक्तियों एवं परिस्थितियों का मूल्यांकन करते हैं। ये मूल्य समाज की रीढ़ होते हैं। ये वे विश्वास होते हैं जिन्हें व्यक्ति किसी दी हुई परिस्थिति में क्रिया करने हेतु चूनता है। कोई आदर्शात्मक, नैतिक अथवा आध्यात्मिक सिद्धांत जो किसी दी हुई परिस्थिति में हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं और जिन पर हमारा व्यवहार आधारित होता हैं, मूल्य कहलाते हैं। मूल्य, समाज दर समाज एवं समय दर समय बदलते रहते हैं। हमारा जीवन इन मूल्यों के इर्द–गिर्द घूमता रहता है। ये मूल्य सही और गलत के

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

हमारे निर्णय द्वारा ही निर्धारित होते हैं। मूल्य वे अन्तहीन विश्वास होते हैं, जो व्यक्तिगत और सामाजिक रूप से स्वीकृत एक निश्चित व्यवहार को निर्धरित करते हैं। मूल्य की तीन प्रमुख विशेषताएँ होती हैं– (1) ये जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में निर्मित होते हैं। और शीघ्रता से परिवर्तित नहीं हैं। (2) मूल्य सही और गलत को परिभाषित करते हैं। (3) मूल्य स्वयं को सत्य–असत्य,वैध–अवैध अथवा सही–गलत सिद्ध नहीं करते।

आलपोर्ट (1905) के अनुसार, "कोई भी साधन जो संतुष्टि उत्पन्न करता है, मूल्य के रूप में पहचाना जाता हैं।" इस प्रकार मूल्य व्यक्ति की पसंद –नापसंद, आवश्यकता, इच्छा एवं संस्कृति द्वारा निर्धारित मानकों को दर्शाते हैं। मानव के दिन–प्रतिदिन के जीवन में उनके व्यवहार एवं क्रियाओं को नियंत्रित एवं मार्गदर्शित करने का कार्य मूल्य ही करते हैं। प्रत्येक शब्द जो हम बोलते हैं, वस्त्र जो पहनते हैं, जिस प्रकार से हम एक दूसरे के साथ अन्तःक्रिया करते हैं, हमारे प्रत्यक्षीकरण आदि में मूल्य प्रदर्शित होते हैं। मूल्य रूचि, विकल्प, आवश्यकता, इच्छा एवं वरीयता के आधार पर निर्मित होते हैं। मूल्य में भावनाओं एवं क्रियाओं के चिंतन, जानने अथवा समझने की प्रक्रिया निहित रहती है। लोगों का व्यवहार हमें उनके मूल्यों को जानने में मदद करता है। किसी व्यक्ति पर किसी प्रकार का दबाव अथवा डर दिखाए बिना किसी निश्चित समय में उसके द्वारा किये जाने वाले व्यवहार अथवा क्रिया के माध्यम से उसके मूल्यों का आकलन किया जा सकता है। सामान्यतः मूल्य व्यक्ति के स्वयं के चयन द्वारा निर्धारित होते हैं। मूल्य मूख्यतः निम्नलिखित तीन आयामों पर आधारित होते हैं।

(1) व्यक्ति का आत्मअनुभूति

(2) आत्मअनुभूति एवं अन्य व्यक्ति जिनके साथ वे प्रतिदिन अन्तःक्रिया करते हैं।

(3) सामाजिक मानक।

मूल्य के प्रकार :–

मूल्य मूख्यतः दो प्रकार के होते हैं–

1. यांत्रिक मूल्य जैसे–रूचि, ऐश्वर्य, समृद्धि आदि।
2. आत्मिक मूल्य जैसे–स्वस्थ्य, सम्मान, पवित्रता आदि।

यांत्रिक मूल्य जहाँ विरोधाभास उत्पन्न करते हैं, वहीं आध्यात्मिक मूल्य भाांति एवं सहयोग लाते हैं। सन् 1979 में बी0आर0गोयल द्वारा 83 मूल्यों की एक सूची बनायी गई। तत्प चात डॉ0 वी0 के0 गोलकर ने क1981 में इन मूल्यों को पाँच आधारभूत मानवीय मूल्यों के रूप में वर्गीकृत किया। इस प्रकार ये पाँच मानवीय मूल्य मुख्य मूल्यों की श्रेणी में आते हैं। ये पाँच मानवीय मूल्य हैं–सत्य, अच्छा चरित्र, भाांति, प्रेम एवं अहिंसा ये पाँच मानवीय अथवा मूख्य मूल्य सार्वभौकि रूप से सभी धर्मों द्वारा स्वीकार किये जाते हैं परन्तु इनकी तुलना में उपमूल्य अधिक प्रेक्षणीय होते हैं, जबकि मुख्य मूल्य की सही पहचान कर पाना कभी–कभी कुछ व्यक्ति इनका दिखावा भी करते हैं, जबकि वास्तव में वे इसे ह्दय से अपनाते नहीं हैं।

मूल्य शिक्षा

समाज के आदर्शों एवं मूल्यों के अनुरूप व्यक्तियों को संतुश्ट करने एवं एक जीवन प्राप्ति हेतु शिक्षा व्यक्ति में मूल्य निर्माण की एक प्रक्रिया है। दार्शनिकों, शिक्षाविदों आदि सभी ने चरित्र निर्माण व अन्तर्निहित गुणों के विकास अथवा समन्वित व्यक्तित्व के विकास हेतु शिक्षा को महत्वपूर्ण बताया है। इन मूल्यों के विकास एवं निर्माण हेतु प्राचीन समय से हमारे गुरूकुलों,आश्रमों एवं वर्तमान विद्यालयों में पृथक रूप से मूल्य शिक्षा देने पर जोर दिया जा रहा है।

अधिगम

मूल्य शिक्षा शिक्षार्थी के चरित्र एवं व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। यह बालकों में एक निश्चित एवं उपयुक्त समय पर मूल्यों का विकास करती है साथ ही उसमें विद्यमान

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

जन्मजात आत्म–केन्द्रीयता को निःस्वार्थता, अपरिपक्वता और बाल्यावस्था को युवावस्था में परिवर्तत कर उन्हें एक मूक श्रोता से एक भाक्तिशाली वक्ता में परिवर्तित करती है। मूल्य शिक्षा व्यक्तित्व के हर पक्ष को ध्यान में रखते हुए बैद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक आदि सभी पक्षों में विकास देती है। इसमें क्या सही है, क्या अच्छा है या क्या सुन्दर है आदि चुनने की योग्यता विद्यमान रहती है। मूल्य परक शिक्षा का मूख्य उद्दे य बौद्धिकता के तीन आयामों–ज्ञानात्मक और क्रियात्मक आयामों के विकास से भी जुड़ा हुआ है। इसके द्वारा अधिगमकर्ता न केवल सही और अच्छे के बारे में जानता है बल्कि सही क्रियायें करने की दिशा में उपयुक्त भाव एवं वचनबद्धता का अनुभव करता है। यह व्यक्तिगत एवं मानवता से जुड़े ज्वलंत मुददों पर समालोचनात्मक चिंतन एवं स्वतंत्र निर्णय की योग्यता विकसित करने वाली प्रक्रिया है।

इस प्रकार मूल्य शिक्षा उत्तम मूल्य एवं चरित्र का विकास करने का उद्देश्य लिए हुए नियोजित भौक्षिक क्रियाओं से युक्त कार्यक्रम है। हमारी प्रत्येक क्रिया और विचार हमारे मस्तिश्क पर एक छाप छोड़ते हैं और यह छाप अथवा भाव ही किसी दिए हुए समय अथवा परिस्थिति में हमारी प्रतिक्रियाएं एवं व्यवहार निर्धारित करते हैं। इन व्यवहारों एवं प्रतिक्रियाओं का मिला–जुला रूप हमारे चरित्र को निर्मित एवं निर्धारित करता है। इन व्यवहारों एवं प्रतिक्रियाओं को परिमार्जित करते हुए चरित्र निर्माण प्रक्रिया को एक नई दिशा प्रदान करना ही मूल्य शिक्षा का मूख्य उददेश्य है। भारतीय संविधान द्वारा भी प्रस्तावना के अन्तर्गत चार सार्वभौमिक मूल्यों का वर्णन किया गया है जो मूल्य शिक्षा को महत्ता प्रदान करते हैं। ये मूल्य निम्नलिखित हैं–

1. स्वतंत्र–विचारों, विश्वासों, आदर्शो, भावनाओं को व्यक्त करने की स्वतंत्रता।
2. समान अवसरों की समानता।
3. बन्धुत्व–व्यक्ति का सम्मान बनाये रखते हुए सम्पूर्ण राश्ट्र की एकता बनाये रखना।
4. न्याय–सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक किसी भी स्तर पर किसी भी वर्ग के साथ अन्याय ना होने देना एवं एक व्यक्ति की स्वतंत्रता को दूसरे मार्ग में बाधक न बनने देना।

इसके अतिरिक्त संविधान के अनुच्छेद 36 से 51 तक प्रदत्त मूल अधिकार एवं अनुच्छेद 51(ए) में प्रदत्त मूल कर्तव्य भी राश्ट्रीय मूल्यों को प्रदर्शित करते है। जो कही न कहीं मूख्य मूख्य अथवा उपमूल्यों के ही रूप हैं। एक नि चत एवं सही दिशा प्रदान ही मूल्य शिक्षा का मूख्य उद्दे य है।

अधिगम

भारत में समय–समय पर गठित विभिन्न आयोगों एवं समितियों की रिपोटों में भी मूल्य शिक्षा प्रदान करने पर वि ोश जोर दिया जाता रहा है।

स्वतंत्रता के पश्चात गठित सर्वेप्रथम आयोग, राधाकृश्ण आयोग (1948–49) ने मूल्य शिक्षा देने पर जोर दिया। आयोग ने विद्यालयों के साथ–साथ वि वविद्यालय, कालेजों एवं महाविद्यालयों में प्रातःकाल प्रार्थना सभा करने पर जोर दिया, साथ ही विभिन्न महापुरूशों के विचारों को पढ़ाने पर जोर दिया। (एन0 सी0 ई0 आर0 टी0,2012 पृ02) मुदालियर कमीशन (1952–53) ने चरित्र निर्माण को शिक्षा का लक्ष्य निर्धारित करते हुए स्पश्ट किया कि भौक्षिक प्रकिया का अंतिम लक्ष्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं चरित्र का इस प्रकार प्रशिक्षण करना हो ताकि वे अपनी समस्त कुशपलताओं को पहचानने योग्य बन सकं और समुदाय की अच्छाई में अपनी योग्यताओं के माध्यम से अपना योगदान दे सकें।

कोठारी आयोग (1964–66) ने "शिक्षा एवं राश्ट्रीय विकास" पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारे पाठ्यक्रमों में सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य शिक्षा की कमी परिलक्षित होती है। आयोग ने इन मूल्यों की शिक्षा हेतु महान धर्मों के नैतिक मूल्य एवं शिक्षाओं को जानने एवं सीखने का मार्ग दिखाया, साथ ही श्रीकृश्ण आयोग के सुझाव "प्रत्यक्ष नैतिक अनुदेश" पर सहमति जतायी, जिसके अनुसार विद्यालयी शिक्षा में सप्ताह में एक या दो कालांश नैतिक शिक्षा के लिए होने चाहिए।

राश्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने आव यक मूल्यों के ह्रास और समाज में बढ़ती स्वार्थपरकता की ओर ध्यान आकर्शित किया। इसमें सामाजिक और नैतिक मूल्यों के उत्पादन हेतु शिक्षा को भाक्ति ााली यंत्र की रूप में प्रयोग करने पर जोर दिया गया, साथ ही स्पश्ट किया गया कि शिक्षा द्वारा अपने लोगों में एकता और बन्धुत्व को बढ़ाने हेतु सार्वभामिक एवं कभी समाप्त न होने ताले मूल्यों का विकास करना चाहिए। शिक्षा नीति की कार्ययोजना (पी0 ओ0 ए0,1992) में विद्यालयी शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर मूल्य शिक्षा के विभिन्न अवयवों को समन्वित करने का प्रयास किया गया है। विद्यालयी शिक्षा के लिए राश्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2000) में विद्यालयी पाठ्क्रमों मूल्य शिक्षा को समन्वित करने पर जोर दिया गया। एकता एवं बन्धुत्व को बढ़ाने हेतु विद्यालयों द्वारा सर्वाभौमिक मूल्यों की ंशिक्षा देने पर जोर दिया गया, साथ ही स्पश्ट किया गया कि संपूर्ण शिक्षा से प्रेम करें और पारस्परिक सहयोग के साथ जीवन निर्वाह करने नागरिक बनें।

अधिगम

राश्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) में भी स्पश्ट किया गया कि शिक्षाऐसी होनी चाहिए कि विद्यालय की प्रत्येक क्रिया में मूल्य निमार्ण की झलक दे। पाठ्चर्या में भिन्नता में एकता एक मानवों के बीच पारस्परिक स्वतंत्रता के प्रति हमारी वचनबद्धता को मजबुत करने पर बल दिया गया जो कि मूल्यों का विकास कर एक बहुसांस्कृतिक समाज में भाांति, मानवता, सहनशीलता आदि गुणों की विकास कर सके।

प्राथमिक शिक्षा

अपने प्रारंभिक दौर में प्राथमिक शिक्षा का केंद्र गुरूकुल अथवा आश्रम करते थे। आज प्रारंभिक शिक्षा की जिम्मेदारी सरकार की है। शिक्षा के अनिवार्य कानुन (2009) का 1 अप्रैल, 2010 से लागु हो जाने से 6–14 आयु वर्ग के बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा अब मूक्त हो गई है। और तो और अब उन्हें दोपहर का भोजन, ड्रेस, किताबें, बैग, जूते सब कुछ निःशुल्क दिया जा रहा है। विद्यालयों की संख्या और शिक्षक –छात्र अनुपात में भी सुधार आया है। जहाँ प्राथमिक स्तर पर इन बच्चों को हिंदी, गणित, कला, सामाजिक विज्ञान की शिक्षा दी जाती है, वहीं विद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा के अन्तर्गत मूल्य शिक्षा पर भी विशेश जोर दिया जा रहा है। चुंकि समाज में मूल्यों का वि ोश स्थान है और विद्यालय समाज का लघु रूप है, इसलिए सामाजिक जीवन जीने के लिए मूल्य अत्यंत आव यक हैं किन्तु आज के भौतिकवादी युग में जहाँ स्वार्थपरता, लोभ, ईर्श्या आदि का बोलबाला है, ऐसे समाज में इन बुराइयों से अछुता रहना एक चुनौती है। ऐसी स्थिति में शिक्षकों का यह दायित्व हो जाता है कि वे विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थीयों में मूल्यों का विकास प्रारंभिक शिक्षा से ही भाुरू करें ताकि विद्यालय से निकलने वाले विद्यार्थी एक सभ्य एवं जिम्मेदार नागरिक बनकर देश की सेवा करें।

मूल्य निर्धारण में विद्यालय शिक्षक की भूमिका

मूल्यों पर आधी–अधूरी व्याख्या देकर मूल्यों का विकास नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार तैरना सिखाने के लिए प्रशिक्षक को स्वयं पानी में उतर कर तैराकी पड़ती है, उसी प्रकार मूल्य शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षक में यह योग्यता होनी चाहिए कि वह विद्यार्थियों को जीवन–जल में उतरने और अपने मूल्यों द्वारा उनका सामना करने हेतु स्वयं के व्यवहार द्वारा प्रेरित करें। उनमें प्रयोगात्मक योग्यताओं का विकास करें जिससे विद्यार्थी जीवन की प्रत्येक परिस्थिति के लिए तैयार रहें।

निम्नांकित बिन्दुओं के माध्यम से शिक्षक अपने विद्यार्थियों में मूल्य का प्रसार कर सकता है–

(1) विद्यार्थियों को प्रेरित करके

शिक्षक अपने विद्यार्थियों के लिए आदर्श होता है। अतः शिक्षकों को अपने व्यवहार, विचार आदि के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान करनी चाहिए, जिससे वे जीवन की प्रत्येक परिस्थिति का सामना कर सकें और अपने उदीयमान भविश्य का निर्माण कर सकें।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

(2) महापुरूशों की जीवनीयों द्वारा उदाहरण प्रस्तुत करना शिक्षक अपने विद्यार्थियों को महापुरूशों के विचार एवं आचरण को आत्मसात करने के लिए प्रेरित करें।

(3) विभिन्न नैतिक गुणों का विकास करना विद्यालयी शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों में, भाांति, प्रेम, धर्मनिरपेक्षता, एकता,सहयोग,सांस्कृतिक,संवर्धन,सृजनात्मकता,राश्ट्रीय एकता एवं बन्धुत्व आदि गुणों के विकास हेतु निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए।

(4) शिक्षार्थियों को उत्पादक एवं सृजनात्मक क्रियाओं में संलग्न करना विद्यालय के शिक्षकों को सतही ज्ञान से हटकर मूलभूत आदर्शों, मूल्यों हेतु अपने विद्यार्थियों के अंतर्निहित गुणों–अवगुणों का ज्ञान प्राप्त कर उन्हें सृजनात्मक एवं उत्पादक क्रियाओं में संलग्न करना चाहिए।

(5) पाठ्येत्तर क्रियाओं पर बाल विद्यालयों के पाठ्यक्रम का पूर्ण ज्ञान देने के साथ–साथ पाठ्येतर क्रियाओं जैसे समुह कार्य, हस्तकौशल आदि का भी प्रशिाक्षण प्रदान करना चाहिए।

(6) आत्म–सम्मान का भाव विकसित करना विद्यालयी शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों के व्यक्तिगत गुणों का सम्मान करते हुए उनमें आत्म–सम्मान व आत्म–प्रकाशन के भाव विकसित करने चाहिए।

(7) अपने विचार प्रकट करने के अवसर देना। शिक्षक को विद्यार्थियों के स्वानुभाव प्रकट करने के अवसर प्रदान करना चाहिए। इस हेतु सप्ताह में एक दिन के क्रियाकलाप ऐसे हों जिनमें विद्यार्थी अपने विचार प्रकट करें।

(8) शिक्षकों द्वारा पूर्ण समर्पण भाव से शिक्षा देना शिक्षक को पूर्ण समर्पण भाव से विद्यार्थियों को
शिक्षित करना चाहिए और उनके अन्तर्निहित गुणों को उजागर करते हुए उनका मार्गद नि करना चाहिए।

(9) अनुशासन बनाये रखना
अनुशासनहीन छात्रों को केवल दण्डित नहीं करना चाहिए, बल्कि उनकी योग्यता को जानकर उन्हें अन्य सृजनात्मक क्रियाओं में संलग्न किया जाए ताकि उनके नाकारात्मक व्यवहारों को पनपने का अवसर न मिल पाए।

(10) पूर्ण मनुश्य बनाने की शिक्षा
विद्यालय में शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों के भाारीरिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक, बौद्धिक विकास द्वारा उनको पूर्ण मानव बनाने का प्रयास किया जाए। प्राथमिक स्तर पर शिक्षक इन्द्रधनुश के सात रंगों की भाँति अपने व्यक्तित्व मे इन सात गुणों के रंग को भरते हुए मूल्यपरक शिक्षा के उद्दे यों को अपनी कक्षा में प्राप्त कर सकता हैं।

निश्कर्श

उपरोक्त विवेचना से स्पश्ट है कि मूल्य निर्माण प्रक्रिया में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। बालक के प्रारंभिक जीवन में ही इसकी नींव तैयार करनी होती है। इस निर्माण प्रक्रिया के मुख्य पात्र के रूप में घर, विद्यालय, पड़ोस, खेल साथी होते हैं। इसमें भी असली भूमिका परिवार और विद्यालय ही निभाते हैं। मूल्य निर्माण की इस पुनीत प्रक्रिया का निर्वहन घर में परिवार के सदस्य तो विद्यालय में शिक्षक निभाते हैं। विभिन्न प्रकार के सम्प्रेशण एवं विद्यार्थियों के मूल्य विकास में विद्यालयी शिक्षकों की भूमिका बढ़ जाती है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय (2015), भारत सरकार वार्शिक संदर्भ ग्रन्थ, नई दिल्ली प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय।
लोढ़ा, महावीरमल (2013) नैतिक शिक्षा के विविध आयाम,हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
भाश्यकराचार्य, वाई एंड राव, डी0 पुल्ला (2009), द रोल ऑफ टीचर्स इन स्ट्रेंथनिंग वैल्यू एजुकेशन।
कुमार सतीश (2009), इन्करेशन ऑफ ह्यूमन वेल्यू इन एजुकेशन,
एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 (2012) , एजुकेशन फॉर वैल्यूज इन स्कूल्स–ए फ्रेमवर्क

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language